RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 50 हल्द्वानी सम्वत् 2083 सोमवार 18 मई 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

तल्लीहाट से रीठा फिर हल्द्वानी आया वर्मा परिवार

नवीन चन्द्र वर्मा से बातचीज

चाँदी का रिवाज सीमान्त में ज्यादा

पर्वतीय आभूषणों का कोई सानी नहीं, आधा किलो तक की हसुली बनती थी

शुरू से ही ट्रेकिंग में रुचि होने से कैलास मानसरोवर सहित कई यात्रा की

व्यापारी नेता, राज्य आन्दोलनकारी के अलावा स्वच्छ छवि के चलते प्रदेश सरकार में वरिष्ठ नागरिक कल्याण परिषद उपाध्यक्ष (दर्जा राज्यमंत्री) बने

कार्यालय प्रतिनिधि

उत्तराखण्ड सरकार में वरिष्ठ नागरिक कल्याण परिषद के उपाध्यक्ष श्री नवीन वर्मा भले ही राज्यमंत्री का दर्जा रखते हैं लेकिन उनकी कार्यशैली और समाज के लिये सोच उन्हें काफी आगे पहले से बनाए हुए है। व्यापारी नेता, उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलनकारी के अलावा स्वच्छ छवि के चलते उन्हें सरकार में भी जो अवसर मिला है उनके अनुभवों का लाभ समाज को होना ही है। मूलरूप से स्वर्णाभूषण के कारोबारी परिवार से होते हुए भी नवीन वर्मा जी सोच केवल व्यापारी बनकर रहने की नहीं रही और वह सामाजिक कार्यों में हाथ बंटाते रहे हैं। उत्तराखण्ड की राजनीति और यहाँ के व्यापारी नेता के रूप में वह कितने मजबूत हैं यह जानने से पहले वर्मा परिवार के बारे में आपको बताते हैं।

यह वर्मा परिवार मूलरूप से चम्पावत के तल्लीहाट का हुआ जो रीठासाहिब (रीठा) में चला गया था। श्री नवीन वर्मा के दादा कृपालाल वर्मा के चार पुत्र, दो पुत्रियां हुईं- हीरा लाल, मोहन लाल, विशन लाल, देवीलाल, मोहनी और जयन्ती। इसके बाद हीरा लाल जी परिवार में राजेन्द्र लाल, प्यारेलाल, सुरेश वर्मा, कलावती वर्मा। मोहन लाल जी परिवार में नवीन चन्द्र, पूरन चन्द्र, स्व. विपिन, दिनेश चन्द्र, कुसुम वर्मा। विशन लाल जी के परिवार में प्रेमा वर्मा, स्व. गिरीश, भुवन चन्द्र, विमला वर्मा, मीना वर्मा, सुधीर, दीपा वर्मा, ललित। देवीलाल जी के परिवार में स्व. किशन वर्मा, स्व. किशोर, दीप चन्द्र, सुनील वर्मा।

सन् 1967 तक कृपालाल जी के इस संयुक्त परिवार का एक पड़ाव हल्द्वानी का भाबर था। जाड़ों में परिवार रीठा से हल्द्वानी आ जाता था। सन् 1968 के बाद हल्द्वानी में स्थायी रूप से निवास करने लगा। हल्द्वानी के पटेल चौक में ही नवीन वर्मा का जन्म हुआ। अपने नैनीहाल पहाड़पानी में रहकर जूनियर हाईस्कूल, चम्पावत से हाईस्कूल, एमबी कालेज हल्द्वानी

शेष पृष्ठ 2 पर

लोक कथाएं हमारी पूर्वगामी पीढ़ियों की आपबीतियों का ही कथात्मक विवरण होती हैं। संसार में हर पल, हर घड़ी कुछ न कुछ घटित होता रहता है और इसी क्रम में कभी-कभी कुछ ऐसा घटित होता है, जिसकी छाप गहरी होने के कारण मिटने का नाम नहीं लेती। इस कॉलम में प्रस्तुत है तीसरी लोककथा -सम्पादक

यह सभी जानते थे कि पान सिंह इतना विपन्न पहले नहीं था, जितना कि अब हो चुका था। उसका एक समय था। वह गाँव का सबसे समृद्ध किसान ही नहीं था, बल्कि उसको प्रखर बुद्धि भी नसीब हुई थी। उसके घर में गाय भैंसों की कई कई धागें (हर्ड) थे। गाँव में दूध की बिक्री का तो तब चलन नहीं था, क्योंकि कोई खरीददार था ही नहीं। फल्दाकोट व्यापारी आकर उससे कई घपोले (काठ का बर्तन) घी एक ही दिन में ले जाते। वह स्वयं भी बहुत परिश्रमी था। विरासत में तो उसे कुछ खास नहीं मिला था, क्योंकि उसका बाप निहायत सीधा साधा इन्सान था और ज्यादा मेहनतकश भी नहीं था। पान सिंह ने जो सम्पत्ति अर्जित की थी, वह उसकी अपनी ही लगन का प्रतिफल थी। वह श्रम की महत्ता खूब समझता था तथा तात्कालिक समस्याओं को सुलझाने में लोग उसका लोहा मानते थे। यह सब होते हुये भी दूरदर्शिता का उसमें अभाव था। अनुशासन की उसमें धीरे-धीरे कमी होती गई। ज्यों-ज्यों उसकी उम्र बढ़ती गई, उसके अन्दर क्रोध की मात्रा भी बढ़ती गई। वह बात-बात पर लोगों से झगड़ने लगता था निर्दोष लोगों के साथ भी मारपीट कर बैठता। यदि झगड़ा खड़ा करने का कोई कारण स्वत: ही नहीं बनता, तो वह उसके लिये जानबूझ कर परिस्थितियां पैदा करने लगा। खामखाँ का झगड़ा मोल लेना, धीरे-धीरे, उसके स्वभाव का ही अंग बन गया। वह गाय बैलों को लेकर चुगाने के लिये जंगल ले जाता और स्वयं रास्ते के किनारे किसी पत्थर पर बैठ जाता। अपनी लाठी को जानबूझ कर पगडन्डी या पैदल रास्ते में इस तरह रख देता जैसे कि राह चलने वालों को यह लगे कि यूं ही लाठी रास्ते में गिर कर आ गई है। राह चलने वालों में कोई सीधा-साधा व नेक इन्सान होगा तो लाठी उठाकर एक तरफ रखते हुए आगे बढ़ता। पान सिंह तिरछी नजर से देखता रहता। वह उस पर बिगड़ता- 'लाठी को छेड़ने की क्या जरूरत थी? उसे लांघ कर नहीं जा सकते थे?' वह बेमतलब ही चुनी हुई गालियाँ दे देता। यदि राहगीर उसकी बात का जवाब दे देता तो नौबत मारपीट तक की आ जाती। यदि कोई नवयुवक या लापरवाह किस्म का आदमी उधर से गुजरता तो वह लाठी से कोई छेड़छाड़ किये बिना- उसे लाँघते हुये आगे बढ़ जाता। इस पर पान सिंह की झिड़की होती- 'अन्धे की औलाद हो क्या? लाठी को एक ओर हटा कर नहीं जा सकते थे। लगता है बहुत बड़े आदमी हो गये।' वह मरने-मारने पर उतारू हो जाता। हर स्थिति में उसे लोगों से लड़ने का बहाना मिल जाता।

धीरे-धीरे उसके, पूरे गाँव के लोगों के साथ सम्बन्ध खराब हो गये। स्वयं उसकी पत्नी व बच्चे भी उसके व्यवहार से तंग आ गये, लड़के घर से भागकर चले गये तथा पत्नी भी मायके जो गई तो लौट कर आने का नाम ही नहीं लिया। अब उसके मन में निराशा का भी वास होने लगा, फलस्वरूप उसने खेतों की

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

दुष्ट प्रवृत्तियां समाज को दूषित करती हैं, इनसे बचना जरूरी है

चम्पावत के मुख्यालय से लगे ग्राम में बालिका के साथ सामूहिक दुष्कर्म और फिर इसे साजिश बनाने का हल्ला चारों ओर मचा। घटना की सच्चाई को अपनी-अपनी सूझ और राजनीतिक रंग से रंगते हुए प्रस्तुत किया जाने लगा परन्तु यह किसी ने नहीं सोचा कि इस प्रकार की घटनाओं से उस बालिका और उसके परिवार पर क्या गुजरेगी जो पीड़ित है। साथ ही दुष्ट प्रवृत्तियां समाज को दूषित करती हैं चाहे वह किसी भी जाति, धर्म, सम्प्रदाय, पार्टियों में हों। अपने बचाव के लिये किसी को बर्बाद करने नीयत घोर निन्दनीय है।

चम्पावत में घटी घटना ने सबको झकझोर कर रख दिया है। अपनी सहेली की शादी में गई एक नाबालिक बालिका के गायब हो जाने फिर एक कमरे में हाथ-पैर बंधे नग्न अवस्था में उसकी बरामदगी, उसके बाद थाने में मामला दर्ज करने को लेकर खुलेआम होती बहसबाजी और भाजपा-कांग्रेस नाम से उलझते दो पक्ष। जिस प्रकार का दिखाया और बताया जा रहा था उसमें बयानबाजियां होने लगीं कि भाजपा के नेताओं का कृत्य है। इसके बाद पुलिस और प्रशासन ने सख्त मोर्चा संभाला तो और भी बयानबाजियां होने लगी कि पीड़िता और उसके पिता पर समझौते के लिये दबाव बनाया जा रहा है। इसके बाद पुलिस की ओर से कहा गया कि बालिका का मेडिकल हो चुका है, तमाम स्थितियों का देखने के बाद साफ हो रहा है कि दुष्कर्म नहीं हुआ बल्कि षड्यन्त्र के तहत तीन युवकों को फंसाने का कृत्य था। इसमें जिस कमल नामक युवक द्वारा बढ़चढ़ कर पीड़िता का पक्ष लिया जा रहा था वही इसका षड्यन्त्रकारी है।

यह पूरा प्रकरण इतना उलझा हुआ है कि एकाएक समझ नहीं आने वाला। क्योंकि जो युवक पीड़ित के पक्ष में था वह पहले भाजपा में था अब कांग्रेस में है और जिनपर आरोप लगा वह भाजपा के हैं। इन दो पक्षों के बीच आपसी मनमुटाव पुराना बताया जाता है। इस पूरी उलझन में एक बालिका को घसीटना दुष्टता है। किसी भी तरह के दुष्टों से समाज को बचना जरूरी है।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

हिन्दू अभ्यर्थी संघीय सेवा में चयनित

इस्लामाबाद। पाकिस्तान की संघीय सिविल सेवा के लिए अल्पसंख्यक हिन्दू समुदाय के दो अभ्यर्थियों का चयन हुआ है। संघीय सिविल सेवा में अल्पसंख्यक समुदाय का प्रतिनिधित्व ऐतिहासिक रूप से कम है। सिंध प्रान्त के जीवन रेबारी और खेम चन्द जंदोरा उन 170 उम्मीदवारों में शामिल थे जो इसमें चयनित हुए।

नेपाल सरकार से नियुक्तियों को रद्द किया

काठमाण्डू। नेपाल की नई सरकार ने राष्ट्रपति पौडेल के माध्यम से एक व्यापाक अध्यादेश जारी कर 1500 से अधिक प्रमुख सार्वजनिक नियुक्तियों को तत्काल प्रभाव से रद्द कर किदया है। ये नियुक्तियां 26 मार्च से पहले सत्ता परिवर्तन से पहले की गई थीं।

कनाडा में खालिस्तानी खतरा घोषित

ओटावा। कनाडा की खुफिया एजेन्सी कैनोडियन सिक्योरिटी इंटैलिजेंस सर्विस ने खालिस्तानी चरमपंथियों को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा घोषित किया है और कहा कि यह समूह देश में अपने हिंसक चरमपंथी एजेंडे को बढ़ावा देने के लिए संस्थानों का इस्तेमाल करता है।

मुम्बई हवाई अड्डे पर सोना जब्त

मुम्बई। सीमा शुल्क विभाग ने दुबई से यहां छत्रपति शिवाजी महाराज हवाई अड्डा पहुंचे यात्रियों से 1.79 करोड़ रुपये से अधिक मूल्य के इलेक्ट्रानिक सामान, सौन्दर्य प्रशाधन, सिगरेट और अपरिष्कृत सोना जब्त किया है। बताया गया है कि तस्करी के आरोप में एक व्यक्ति को पकड़ा भी गया।

पटाखा कारखाने में विस्फोट से तबाही

बीजिंग। चीन के हुनान प्रान्त के लियुयांग शहर में पटाखा कारखाने में विस्फोट से 26 लोगों की मौत हो गई और 61 घायल हो गए। हुआशेंग फायरवर्क्स मैन्युफैक्चरिंग एण्ड डिसप्ले कम्पनी के कारखाने में हुए इस भीषण विस्फोट से कई किमी तक तबाही का मंजर दिखाई दिया।

धर्मगुरु मौलाना इदरीश की हत्या

पेशावर। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रान्त में लक्षित हमले में एक प्रमुख धर्मगुरु की गोली मारकर हत्या कर दी गई। पुलिस के अनुसार अज्ञात बन्दूक धारियों ने चारसद्दा जिले के धारियों ने चारसद्दा जिले के उस्मानजई इलाके में शेख-उल-हदीश मौलाना मौलाना इदरीश पर हमला कर मार दिया।

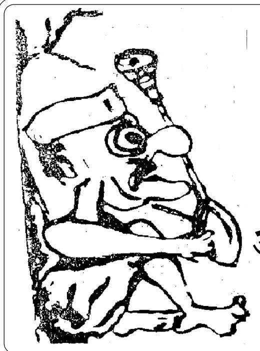

फसक

दाज्यू, चुनाव से पहले ही उधेड़ देने वाले ठैरे

अरविन्द पाण्डे को लेकर नामधारी ने और ही कर दी है बल

दाज्यू, 5 राज्यों चुनाव की फरफराट के बाद अपने प्रदेश के तराई में इन दिनों लड़भैंसा वाली हालत हो गई है। बंगाल में ममता दीदी को आउट कर भगवा होते ही हमारे कस्बे में नारे लगने लगे। दाज्यू, उत्तराखण्ड की मेहनत देश में सरपट दिखाई दे रही है बल। तराई में जुवा नेता नामधारी के दायित्वधारी बनते ही जुलूस निकला। बड़े नेता नामधारी ने तो पूर्व मंत्री अरविन्द पाण्डे को लेकर और ही कर दी है बल। नामधारी कह रहे हैं- 'मंत्री रहते हुए इन्होंने पूरब से लाकर अपने भाई-भतीजों को यहाँ लगा दिया है। तनख्वाह इधर से लेते हैं और गूलरभोज जाकर कोई इसकी सब्जी ढो रहा है, कोई बन्दूक उठा रहा है.....।' दाज्यू, अरविन्द पाण्डे ने खूब लट्ठपेल राजनीति की है बल। अब बोलने वाले क्यों छोड़ेंगे उन्हें? सब कचार ही कचार दिखाई दे रहा है। चम्पावत में नारे लग रहे हैं सबका साथ सबका विकास लेकिन सामूहिक दुष्कर्म के मामले ने डरा दिया है। पता नहीं कौन किसका क्या करने वाला है। आमने-सामने दनादन हो जा रही है बल। काशीपुर में जीजा अपनी साली को लेकर फरार हो गया। नाबालिक की दीदी ने पुलिस को बताया है कि बहन को लेकर फरार पति तलाश देने की धमकी दे रहा है। दाज्यू, किस-किस का भगन्दर कैसे ठीक किया जाए। वैसे भी चुनाव के माहौल में कौन चुप रहेगा। चुनाव से पहले उधेड़ देने वाले ठैरे। चुपचाप रहने वाले भी पुराने मामलों को लूंण-खुसाणि लगाकर बता रहे हैं। पाण्डे ज्यू भी उलट-पलट समझते हुए मौका पलटी बयान करते रहते हैं।

दाज्यू, राहुल गांधी का करीबी बताकर पार्टी नेताओं से ठगी करने वाला पुलिस ने पकड़ लिया। भगवान जाने नेताओं को भी कौन ठग लेता होगा। भावना पाण्डे नामक धाकड़ नेता है बल, उसने पुलिस को शिकायत की थी। लग रहा है पकड़े गया अमृतसर निवासी गौरव कुमार ने नेताओं के सहारे अपनी दाल-रोटी का जुगाड़ बना रखा होगा। अब पकड़ा गया तो बातें होने लगी हैं। कुछ कहने लायक नहीं रह गया है, जिसको जो करना है करते जा रहा है। हल्द्वानी में एक पार्षद ने तहसील दिवस के दिन तहसीलदार के आफिस के बाहर भीड़ के साथ धरना प्रदर्शन किया। साथ ही नायब तहसीलदार को जमकर लताड़ना शुरू कर दिया और वीडियो सोशल मीडिया पर दिखाई जाने लगी। दाज्यू, वीडियोबाजी के आगे तो सब जोर-जोर से भूंभाट-फूंफाट करने लगे हैं। तभी तो कह रहे हैं कि गू-कचार सब मिसी गया ठैरा। कौन इज्जत किसकी इज्जत। जिसकी उतारनी हो उतार डालो चल रहा है। लट्ठबाजी करते हुए भौलू और चैनू भी अलमस्त हो चुके हैं। लालकुआ में नगर पंचायत अध्यक्ष और सदस्यों के बीच फोड़ाफोड़ हो गई। दोनों पक्ष लट्ठ-पत्थर लेकर कपड्योव करने लगे थे बल। अब पुलिस में रिपोर्ट के बाद किस्सा आगे बढ़ चुका है। सितारगंज में तो हाथी दांत तस्करी में बीडीसी मेम्बर के पति समेत दो तस्कर गिरफ्तार हुए हैं। स्पेशल टास्क फोर्स और वन विभाग ने बाराकोली रेंज से इन्हें पकड़ा। दाज्यू, ये जितने भी मामले हैं चुनाव के धर्मखाते में भी शामिल होंगे...........पता नहीं अभी आगे-आगे क्या देखना होगा।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

तल्लीहाट से रीठा....

प्रथम पृष्ठ का शेष

से इण्टर, अल्मोड़ा में बीएससी, नैनीताल में एमएससी करने वाले श्री वर्मा जी का पैतृक कार्य स्वर्णाभूषण से जुड़ा था लेकिन इनकी रुचि खेल, घुमक्कड़ी, सामाजिक कार्यों में रही है। वर्तमान में तिकोनिया के गुरुतेगबहादुर मार्ग में उनका अपना आवास है। उनके साथ सौ वर्षीय माता श्रीमती माधुरी वर्मा का आशीर्वाद है। उनकी सामाजिक अभिरुचि में साथ देने वाली पत्नी श्रीमती बीना वर्मा हैं। वर्मा जी की अगली पीढ़ी में पुत्री अमिता वर्मा, दीपक वर्मा, तनुज वर्मा हैं।

इस प्रकार भले ही तल्लीहाट फिर रीठा से वर्मा परिवार का आगमन इस भाबर में हुआ है लेकिन नवीन वर्मा तो पूरी तरह जन्म से लेकर हल्द्वानी की पहचान हैं। यही कारण है शहर में नियोजित विकास को लेकर उनकी पुरानी मुहीम रही है। कारोबार के रूप में उनका ज्वैलरी का प्रतिष्ठान है लेकिन उनकी दौड़धूप से कोई नहीं कहेगा वह व्यापारी हैं। अपने पम्परागत कार्य पर चर्चा करते हुए वर्मा जी कहते हैं- पर्वतीय आभूषणों का कोई सानी नहीं। पहाड़ों में जिस प्रकार की ज्वैलरी का चलन रहा है, हम जैसे-जैसे चीन सीमा की ओर को जाएंगे वहाँ चाँदी का ज्यादा चलन है। मैदान को आते-आते इनका प्रकार बदल जाता है और सोने के आभूषण दिखाई देते हैं। पहले 250 ग्राम तक के सूते/सुतले गले के बनते थे। हाथ के धगुले 200 ग्राम तक और हसुली लगभग आधा किलो तक की होती थी। कमरबन्ध तो 500 ग्राम से कम के बनते ही नहीं थे। पहाड़ों में सोना उतना नहीं था लेकिन चाँदी के चलन ने सारे रिवाज पूरे किये, जो आज तक भी बने हुए हैं।

अपनी पढ़ाई के साथ खेल व ट्रेकिंग में अभिरुचि रखने वाले वर्मा जी ने पैदल यात्रा करते हुए दो बार कैलास मानसरोवर और 5 बार आदि कैलास यात्रा की है। वह कहते हैं- यात्राओं में बहुत कुछ देखने और सुनने-सीखने को मिलता है। मालपा में प्रकृति के कोहराम से पहले उन्होंने कह दिया था कि मालपा से बूदी के बीच गरमपानी के कई स्रोत हैं जिससे विस्फोट हो सकता है। अपनी यात्राओं में वह केवल जाना-जाना नहीं करते बल्कि हर यात्रा के पीछे अध्ययन भी होता रहा है। हल्द्वानी के भवानीगंज स्थित डॉ. निर्मल मुनगली के वहाँ किराये पर रहते हुए 1968 में इन्होंने अपना मकान बनाया। साथ ही शहर की हर भली गतिविधियों में जुड़े रहे। 1986 में व्यापार मण्डल से जुड़ गए। नगर उपाध्यक्ष, महामंत्री, प्रदेश मंत्री रहे। पृथक राज्य बनने के बाद 2004 में व्यापार मण्डल के संयुक्त महामंत्री, 2009 से 2018 तक महामंत्री और 2018 से प्रदेश अध्यक्ष हैं।

राज्य आन्दोलनकारी के रूप में इनकी अग्रणीय भूमिका रही है। राज्य आन्दोलनकारी छात्र संघर्ष समिति की

टीम में 5 प्रमुख लोग थे जिसमें एन.सी. तिवारी संयोजक, हेमन्त बगड्वाल, दीवान सिंह बिष्ट, हुकुम सिंह कुंवर और वर्मा जी। 1998 में जमरानी बांध निर्माण संघर्ष समिति बनी, उसमें भी ये नेतृत्व की भूमिका में थे। जमरानी बांध आन्दोलन को लेकर बंशीधर भगत शुरुआत से रहे हैं लेकिन आन्दोलन को आगे बढ़ाने में इस समिति का योगदान गिना जाता है।

खेलों में रुचि के कारण नवीन वर्मा इससे जुड़े रहे हैं। 2004 सुरेन्द्र रावत जी ने स्पोर्ट्स एसोसिएशन बनाई थी। 1998-99 में विविधवत रूप से हल्द्वानी महोत्सव की नींव रखी। इस प्रकार शहर व इससे बाहर भी हर प्रकार से समर्पित रहते हुए नवीन वर्मा ने जिस प्रकार का मुकाम पाया है वह हमेशा सूझबूझ मार्ग दिखाने वाला रहा है। पार्टियों के झण्डे एक तरफ, इनकी स्वयं की ईमानदारी सकारात्मक ऊर्जा देती है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

शोध

हिमालय की पारिस्थितिकी तेजी से बदल रही

अल्मोड़ा। जीबी पन्त राष्ट्रीय हिमालीय पर्यावण संस्थान और सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के शोध में बताया गया है कि हिमालय की पारिस्थितिकी तेजी से बदल रही है। शोधार्थियों ने अपने अध्ययन में पाया कि कई विदेशी प्रजातियों के पौधे अलग-अलग स्थानों पर ऊंचाई वाले क्षेत्रों में फैलकर स्थानीय जैव विविधता को प्रभावित कर रहे हैं।

जीबी पन्त राष्ट्रीय हिमालीय पर्यावण संस्थान और सोबन सिंह जीना विवि अल्मोड़ा के शोधार्थियों ने चम्पावत जिले के 9 ग्रामों में किए गए शोध में पाया कि लैंटाना कैमारा, पार्थेनियम हिस्टेरोफोरस, एजरेटिना एडेनोफोरा और बिडेंस पिलोसा जैसे विदेशी पौधे तेजी से फैल रहे हैं। पता चला कि 700 से 1200 मीटर की ऊंचाई वाले निचले इलाकों में लैंटाना और पार्थेनियम अधिक मात्रा में फैल रहे हैं। इसके अलावा 1200 से 1700 मीटर की ऊंचाई में एजरेटिना और बिडेंस प्रजाति का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है। 1700 मीटर से अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में एजरेटिना और बिडेंस प्रजाति फैली है।

यात्रा

आदिकैलास और लाटू देवता के दर्शन का जुटे

पिथौरागढ़/चमोली। यात्रा सीजन में चार धाम यात्रा के अलावा अन्य महत्वपूर्ण धार्मिक व पर्यटन से जुड़ी यात्राएं जारी हैं

आदि कैलास यात्रा को सुरक्षित, सुव्यवस्थित बनाने को तैयारियां की गई हैं। कपाट खुलते ही इस यात्रा पर आने वालों की संख्या बढ़ने लगी है। प्रशासन ने यात्रियों से अपील की है कि यात्रा के दौरान निर्धारित दिशा-निर्देशों का पालन करें तथा मौसम की परिस्थितियों को देखते हुए आवश्यक सावधानियां बरतें। यात्रा के लिये आने वालों को परमिट जारी किये गये हैं। यात्रा कारणों से व्यास घाटी के होम स्टे संचालकों, धारचूला के होटल व्यवसाइयों, टूर आपरेटरों में खुशी है। कुटी के प्रधान नागेन्द्र सिंह बताया कि यात्रा के पहले ही दिन 250 से अधिक यात्रियों ने शिवधाम के दर्शन किये।

उधर वांण स्थित लाटू देवता के कपाट खुलने के बाद से यात्रा जारी है। नन्दादेवी के मुंहबोले भाई लाटॅ देवता के दर्शन के लिये लोग जुटे हैं। पारम्परिक तरीके से कपाट खोलने की प्रकिया के बाद ग्रामीणों ने नृत्यगीत भी किये।

नेक कार्य

वन्यजीवों की प्यास बुझाने को टैंकरों से भरे तालाब

हल्द्वानी। मानव वन्यजीव संघर्ष की बढ़ती घटनाओं के बीच लगतार बढ़ रहे तापमान से जंगलों में प्राकृतिक जलस्रोत नौले, गधेरे, तालाब सूख गए हैं। ऐसे में वन्यजीव प्यास बुझाने को जंगलों से बाहर निकलेंगे और और टकराव होगा। इसकी रोकथाम के लिये वन विभाग ने वाटर टैंकरों से प्राकृतिक स्रोतों को पानी से भरने का नेक कार्य किया है।

हल्द्वानी वन डिवीजन के अन्तर्गत नन्धौर वन्यजीव अभ्यारण्य में वर्ष 1012 में बना और 269 वर्ग किमी में फैले अभ्यारण्य के जंगल नैनीताल, उधमसिंह नगर और चम्पावत जिले तक फैले हुए हैं। इस अभ्यारण्य के जंगलों में नन्धौर सूखी आदि नदियां हैं लेकिन बढ़ते तापमान से जल स्रोत सूखने पर वन्यजीवों को दिक्कत है और टकराव की स्थिति है। ऐसे में विभाग ने नन्धौर अभ्यारण्य में वाटर होल्स बनाने के साथ ही प्राकृतिक जलस्रोतों में वाटर टैंकरों से नियमित पानी भरना शुरू करवा दिया ताकि वन्य जीवों को आराम हो और वह आबादी क्षेत्र में न आएं।

ज्योतिष की बातें

इस सप्ताह चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य किसी भी ग्रह का राशि परिवर्तन नहीं हो रहा है । सम्पूर्ण सप्ताह मंगल स्वराशि मेष में, बुध व शुक्र मित्रराशि वृषभ व मिथुन में, शनि समराशि मीन में, सूर्य व गुरु शत्रुराशि वृषभ व मिथुन में गोचर करेंगे तथा चन्द्रमा इस सप्ताह वृषभ, मिथुन, कर्क व सिंह राशि में क्रमशः गोचर करेगा। सभी सप्तग्रह इस सप्ताह मार्गी रहेंगे।

23 मई 2026 को पिछले 24 दिनों से अस्त चल रहा बुध वृषभ राशि में पश्चिम दिशा में उदय हो जाएगा।

'ज्योतिष की बातें' नामक इस स्थायी स्तम्भ में भिन्न-भिन्न ग्रहों का गोचरफल मन्त्रेश्वरकृत फलदीपिका नामक ग्रन्थ के आधार पर जातक की चन्द्र राशि के अनुसार प्रस्तुत किया जाता है। यहाँ पर गोचर फल को स्थूल रूप से ही सही मानना चाहिए। व्यक्ति विशेष के लिए सूक्ष्म फलित उसकी जन्मकुण्डली, नवमांश कुण्डली, महादशा, अन्तर्दशा आदि पर निर्भर करता है। जिन जातकों के पास जन्म कुण्डली अथवा जन्म विवरण नहीं है, जिन्हें केवल अपनी राशि की ही जानकारी है, उन्हें इस गोचरफल से एक अनुमान अवश्य प्राप्त हो जाता है।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार

पेट्रोल का संकट अथवा दोहन

एक अनुमान के अनुसार यदि इसी प्रकार पेट्रोल आदि पदार्थों का उपयोग होता रहा तो अगले 50 वर्ष में इस पृथ्वी से पेट्रोल व गैस आदि समाप्त हो जाएगी। फिर उसके बाद क्या होगा! ऊर्जा की आवश्यकताओं को पूर्ति के लिए जमीन के अन्दर से कोयला निकाला जाता है। कोयला निकालने से जमीन के अन्दर का बहुत बड़ा भाग खोखला हो चुका है। पेट्रोल गैस आदि के दोहन से भी जमीन खोखली हो रही है। यह भविष्य के लिए प्राकृतिक संकट को आमन्त्रित करने जैसा है। कोयला, पेट्रोल गैस आदि का निर्माण होने में, कहा जाता है कि, लाखों करोड़ों वर्ष लगते हैं। जो पदार्थ लाखों वर्षों में बनकर तैयार होता उसको 100-50 वर्षों में नष्ट कर देना कहाँ की बुद्धिमानी है। प्रकृति में उपलब्ध हवा, पानी, नमक, वनस्पतियाँ, पेड़-पौधे आदि को उतनी ही गति से उपयोग करना चाहिए जितनी गति से उनका निर्माण प्रकृति में सम्भव होता है। प्रकृति में पानी अधिक उपलब्ध है तो उसका अधिक उपयोग किया जाता है, सोना कम मात्रा में उपलब्ध है तो उसका कम मात्रा में उपयोग किया जाता है। ऊर्जा की आवश्यकताओं को अन्य माध्यमों से भी पूरा किया जा सकता है बिना प्रकृति को नष्ट किए। पेट्रोल गैस आदि के विकल्प को ढूंढने की अत्यन्त आवश्यकता है और विकल्प भी ऐसा होना चाहिए जो पर्यावरण के अनुकूल हो ।

-ओंकार नाथ कोष्टा

कुटीरउद्योग

बेहतर पोषण से भरपूर है शहद

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

मधुमक्खियां न केवल पौष्टिक शहद देती हैं, बल्कि हिमालय की जैव विविधता और पर्यावरण सन्तुलन में भी इनकी अहम भूमिका रहती है। लेकिन अब कीटनाशकों के अन्धाधुन्ध इस्तेमाल और जंगलों की आग ने मधुमक्खियों के जीवन के लिए संकट खड़ा कर डाला है। इसका शहद उत्पादन पर भी बुरा असर पड़ रहा है। हालात यह है कि एक समय पहाड़ में जहाँ 10 कुन्तल शहद का उत्पादन होता था, वहाँ आज बड़ी मुश्किल से एक कुन्तल शहद ही मिल पा रहा है। पलायन का भी शहद उत्पादन पर बड़ा असर पड़ा है। कभी कीटनाशक रसायन, कभी आसमानी ओले तो कभी भोजन की कमी के चलते मधुमक्खियों का जीवन संकट में है। इनके असमय दम तोड़ने के चलते सर्वाधिक प्रभाव हद उत्पादन पर पड़ रहा है।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार इस समय प्रदेश में 1600 मीट्रिक टन शहद का उत्पादन हो रहा है लेकिन अब ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन एवं मधुमक्खियों की असमय मौत के चलते इसमें भारी गिरावट आ रही है। मौन उत्पादन से जुड़े काश्तकार धीरे-धीरे इस व्यवसाय को छोड़ रहे हैं तो शहद उत्पादन सम्बन्धी सरकारी कार्यक्रम कागजों से जमीन पर नहीं उतर पाता। फूल जो मधुमक्खी के आहार का मुख्य स्रोत है उसमें फैलते रसायनिक कीटनाशकों के जहर से मधुमक्खियां लगातार मर रही हैं। जंगलों में लगने वाली आग भी इनके मौत का कारण बन रही है। वर्षाकाल में तो इनके लिए भोजन जुटा पाना भी मुश्किल हो जाता है। जून से अगस्त माह के तीन महीनों में प्राकृतिक फूलों की कमी के चलते इन्हें अपना आहार जुटाने में मुश्किल आती है। इन दिनों मुधमक्खी पालक इन्हें भोजन के तौर पर चीनी उपलब्ध कराते हैं लेकिन चीनी इतनी महंगी है कि इसे आदमी खाये या मधुमक्खियों को खिलाए? नाशपाती, लीची, आम, सेब, अमरूद आदि के फूलों के साथ ही गुलाब और अन्य फूलों की प्रजातियों में भी भारी कमी आने से मधुमक्खियों को भोजन जुटाने में कठिनाई होती है। आहार न मिलने से ये असमय दम तोड़ जाती हैं। ऐसे में मधुमक्खी पालकों के समक्ष बड़ी समस्या यह पैदा हो रही है कि वह इनका भोजन कहाँ से लाएं? दूसरी तरफ विशेषज्ञों का कहना है कि पर्यावरणीय असन्तुलन के चलते फूलों से निकलने वाला नेक्टर मीठा द्रव्य कम हो रहा है जिसके चलते फलों में पर्याप्त पराग पैदा नहीं हो पा रहा है। पराग में नेक्टर कम बनने से मधुमक्खियों को शहद के लिए जरूरी शुगर नहीं मिल पा रहा है जिसके चलते शहद के उत्पादन में कमी आ रही है। विशेषज्ञ अच्छे पराग के लिए समय पर वर्षा और उचित तापमान को जरूरी बताते हैं लेकिन जलवायु परिवर्तन इसमें बाधा बना हुआ है। मधुमक्खियों के दुश्मनों की संख्या में वृद्धि भी एक बड़ी वजह मानी जा रही है। भालू, किंग क्रो, बी हाईपर एवं अंगलार मधुमक्खियों को अपना भोजन बना रहे हैं। इसके अलावा पहाड़ों में मौन पालन का वैज्ञानिक ढंग से न किया जाना भी शहद उत्पादन को प्रभावित कर रहा है।

वनों में मधुमक्खियां वृक्षों के ऊपर छत्ते बनाती हैं। इनके परागण से फूल, फल एवं बीज बनते हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि वनों में जितना अधिक परागण होगा उतनी ही अधिक जैव विविधता बढ़ती है। सर्वाधिक परागण मधुमक्खियों द्वारा ही होता है। यह भी माना गया है कि उच्च हिमालयी क्षेत्र में परागणकर्ता की कमी के कारण कई दुर्लभ वनस्पतियां विलुप्ति के कगार पर हैं। जैव विविधता के लिए मधुमक्खियों का संरक्षण जरूरी माना गया है। वनों की जीवन प्रणाली को भी सुदृढ़ करने के लिए इनकी अधिकतम संख्या होनी चाहिए। पहाड़ के हर गाँव में हर घर में मधुमक्खियों के छत्ते होते थे। लोग अपनी आवश्यकताओं के पूर्ति के बाद इसका विक्रय करते थे। पहले पहाड़ों के हर घर में मौनों के लिए अलग से डिब्बा लगता था शायद ही कोई घर हो जहाँ पर मौन पालन न होता हो। लोग अपनी जरूरत का शहद उत्पादन कर लेते थे लेकिन आज वे अपनी आवश्यकताओं के लिए भी बाजार पर आश्रित हैं। आज पहाड़ी शहद मिल पाना मुश्किल हो रहा है। पिथौरागढ़ के गुरना क्षेत्र जहाँ पर्याप्त मात्रा में शहद उत्पादन होता था वहाँ 90 प्रतिशत उत्पादन घटा है। इसकी वजह खेती एवं उद्यान में कीटनाशकों का प्रयोग माना जा रहा है। यहाँ के 30 से अधिक गाँवों में शहद उत्पादन होता है। पहाड़ में शहद का उत्पादन तेजी से घट रहा है। एक समय यहाँ पर 10 कुन्तल तक शहद का उत्पादन होता था जो अब एक कुन्तल तक पहुँच गया है। यही हाल पिथौरागढ़ जनपद के नेपाल सीमा से लगे गाँवों का भी है। 300 से अधिक परिवारों ने मौन पालन का काम छोड़ दिया है। जिले में 400 परिवार मौन पालन से जुड़े हैं लेकिन अब इनका रुझान इस ओर कम हो रहा है। जनपद के गुरना, डाकुड़ा, जमराड़ी, जाड़ापानी, बेड़ा, गोगिना, हिमतड़, बलुवाकोट, परम, जम्कू, सिर्खा, सिर्दांग, किमखोला, बौना, तामिक, गौल्फा, नामिक, कूटा, अस्कोट, पनार आदि क्षेत्र में जमकर उत्पादन होता था। जिले के धारचूला के नारायण आश्रम, बलुवाकोट, पैयापोड़ी, जम्कू, गोरीछाल, तोमिक, गर्खा, जमतड़ी, भटेड़ी, गोगिना, बड़ालू, गोरीछाल, तल्लाबगड़ गोगिना, झूलाघाट, थली आदि में व्यापक मात्रा में शहद का उत्पादन होता था। जौलीजीवी मेले में यहाँ का शहद खूब बिकता था। राज्य गठन के समय जिले में शहद उत्पादन करीब 2000 कुन्तल था जो अब गिरकर 700 कुन्तल तक पहुँच गया है। पड़ोसी जनपद चम्पावत हो या फिर अल्मोड़ा, बागेश्वर, नैनीताल हर जगह जमकर शहद उत्पादन होता था लेकिन पर्याप्त संरक्षण न मिलने से मौन पालक अब इस व्यवसाय को छोड़ रहे हैं। उद्यान विभाग की तमाम कोशिशें भी मौन पालन को स्वरोजगार का जरिया नहीं बना पाई। कहने को तो उद्यान विभाग समय-समय पर मौन पालन का प्रशिक्षण देता है। मौन बॉक्स, जाली, मोम सीट, दस्ताने, मुंह रक्षक जाली, स्वार्म बैग, क्वीन गेट आदि वस्तुएं भी निःशुल्क उपलब्ध करायी जाती हैं लेकिन इसके बाद भी मौन पालन की तरफ लोगों का रुझान कम ही है। उद्यान विशेषज्ञों के अनुसार कीटनाशकों के प्रयोग से मधुमक्खियों की मौत हो रही है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

वन विभाग की सख्ती से मचा है हड़कम्प

रामनगर। पूछड़ी क्षेत्र में वन विभाग ने फिर से अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की योजना बनाई है जिससे हड़कम्प मचा है। इसमें 72 अतिक्रमणकारियों को नोटिस देते हुए हटने को कहा। इससे पहले 51 अवैध मकानों को तोड़ दिया गया था।

चार्टनलॉज भूस्खलन क्षेत्र को राहत मिलेगी

नैनीताल। शहर के चार्टरलॉज भूस्खलन प्रभावित क्षेत्र में सुरक्षात्मक कार्यों के लिए शासन ने 6 करोड़ 17 नाख 83 हजार रुपये वित्तीय स्वीकृति प्रदान की है। सीएम के हल्द्वानी दौरे में विधायक सरिता आर्या ने इस स्वीकृति पर आभार व्यक्त किया और कहा इससे भूस्खलन क्षेत्र को राहत मिलेगी।

गौलापार में बनेगा निजी बसों का स्टैंड

हल्द्वानी। आने वाले समय में गौलापार में निजी बसों का स्टैंड बनेगा। शहर में बाहरी राज्यों के निजी बस ऑपरेटरों की मनमानी के लिये परिवहन विभाग ने सख्ती की है। कहा है कि अवैध रूप से बसें खड़ी करने के बजाय अपने निजी बस स्टैंड विकसित करें।

खेतीखान में दुमंजिला पार्किंग

चम्पावत। खेतीखान में दोमंजिला पार्किंग निर्माण कार्य शुरू हो चुका है। इससे जाम की समस्या से राहत मिलेगी। ग्रामीण निर्माण विभाग ने पुरानी आईटीआई के पास इसका निर्माण शुरू कर दिया है। इसकी टेण्डर प्रक्रिया अप्रैल में ही पूरी कर ली गई थी।

बुंगाछीना में मां हरनन्दा महोत्सव

पिथौरागढ़। बुगांछीना में तीन दिवसीय मां हरनन्दा महोत्सव का आयोजन किया गया। इसमें स्थानीय स्कूलों के बच्चों व कलाकारों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। इस अवसर पर सेनि. प्रो.दीवान सिंह चौहान, कुन्दन सिंह धामी, दयाकिशन चौसाली, पदम सिंह बसेड़ा आदि थे।

रीठासाहिब में मां शिला देवी महोत्सव

चम्पावत। रीठासाहिब में तीन दिवसीय मां शिलादेवी महोत्सव की धूम रही। लोक कलाकारों सहित आमंत्रित कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियों से मन मोहा। दर्जा मंत्री मुकेश महराना, पाटी के ब्लाक प्रमुख शंकर अधिकारी, जिला पंचायत सदस्य सोनू बोहरा सहित तमाम लोग मौजूद थे।

बेतालेश्वर में होगा सुन्दरीकरण

अल्मोड़ा। हवालबाग ब्लाक और मुख्यालय के समीप धार्मिक पर्यटन के तहत बेतालेश्वर शिवमन्दिर के सुन्दरीकरण की कवायद शुरू हो चुकी है।

परिक्रमा

फचैऽक

पाखन में पाथर हरै गई, सिमेंटाक लेंटरों हैगै इफरात उचेड़ि हाली बाखई बाखइ, लेंटर खिति हाली रातोंरात लेंटर खिति हाली रातोंरात, पाथरोंकि खुपड़ि हियाव भै शान बणलि बिरादरी में, गौं गौं पन यसि बिकाव भै दार पाथर गार माटै कुड़ि, आब गरीब गुर्बनाक रै गई ह्यून चैमास में भाल हुंछी, पाखन में पाथर हरै गई ।

गणेश पाण्डेय

दो नए प्लेटफार्म बनने से ज्यादा उम्मीद

टनकपुर। अमृत भारत योजना के तहत टनकपुर रेलवे स्टेशन के सौन्दर्यीकरण का कार्य गति में है। इसमें नए प्लेटफार्म बनने से और अधिक ट्रेनों के संचालन की उम्मीद है। वर्तमान में दिल्ली, त्रिवेणी, देहरादून, अछनेरा, सिंगरौली एक्सप्रेस ट्रेनों का संचालन हो रहा है।

अभी तक स्टेशन में मात्र तीन प्लेटफार्म होने से अधिक संख्या में ट्रेनों का ठहराव की समस्या आ रही रही थी। स्टेशन मास्टर गोपाल पिपरिया ने बताया कि वर्तमान में स्टेशन से प्रतिदिन प्रातः 7 बजे पीलीभीत, दोपहर 11.45 बजे पीलीभीत दोपहर 2.55 बरेली सिटी, सायं 5.50 बजे पीलीभीत के लिये पैसेंजर ट्रेनों का संचालन हो रहा है। जबकि एक्सप्रेस ट्रेनों में अछनेरा, सिंगरौली, दिल्ली, पूर्णागिरी जन शताब्दी रवाना होती हैं।

इस बार बोना में होगा गेलपातल

हल्द्वानी। जोहार सांस्कृतिक एवं वेलफेयर सोसाइटी द्वारा इस बार अपना 14वां गेलपातल आयोजन वन पंचायत, ग्राम सभा बोना (मुनस्यारी) में किया जा रहा है। सोसाइटी के अध्यक्ष डी.एस. पांगती ने बताया कि आयोजन को लेकर तैयारी की जा रही है। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को होने वाले सघन वृक्षारोपण के इस आयोजन में गत वर्षों की भांति कार्यक्रम निर्धाधित हैं लेकिन 6 जून को पशुधन चिकित्सा कैम्प का आयोजन विशेष रूप से किया जा रहा है। इससे दूरस्थ इलाके के पशुपालकों को पशुओं से जुड़ी जानकारी व उनकी समस्याओं के बारे में परमार्श एवं पशुओं को इलाज मिल सकेगा।

गेलपालल आयोजन में स्थानीय स्कूली बच्चों एवं ग्रामवासियों द्वारा पर्यावरण जागरूकता रैली, गाँव के स्कूल, मन्दिर व सार्वजनिक स्थलों पर सांकेतिक वृक्षारोपण, जोहार शौका डॉक्टर एसोसिएशन द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर लगाया जा रहा है। इस दौरान शौका व्यंजन प्रतियोगिता, स्कूली बच्चों एवं स्थानीय महिला/पुरुषों द्वारा पर्यावरण सम्बन्धित प्रतियोगिता, कार्यक्रम स्थल पर पारम्परिक ढुस्का-चाँचरी, मध्याह्न सामूहिक सहभोज के अलावा सांस्कृतिक संध्या व सम्मान समारोह व पुरस्कार वितरण किया जाएगा।

द्वाराहाट में केवि संचालन को प्रदर्शन

द्वाराहाट। केन्द्रीय विद्यालय के संचालन की मांग को लेकर जबर्दस्त प्रदर्शन हुआ है। क्षेत्रवासियों ने गर्जना रैली निकालते हुए शासन प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की।

जन एकता मंच के तत्वावधान में विभिन्न संगठनों के लोगों ने त्रिमूर्ति चौक पर एकत्रित होने के बाद मुख्य बाजार होते हुए घटगाड़ तिराहे तक गर्जना रैली निकाली। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि 2005 से भूतपूर्व सैनिक संगठन सहित क्षेत्रीय जनता द्वाराहाट में केन्द्रीय विद्यालय की मांग करती आ रही है। लम्बे संघर्ष के बाद दिसम्बर 2024 में विद्यालय को स्वीकृति तो मिल गई लेकिन डेढ़ वर्ष बीत जाने के बावजूद अभी तक कक्षाएं शुरू नहीं हो पाई हैं। अपनी इसी नाराजी को लेकर यह प्रदर्शन किया जा रहा है।

प्रदर्शनकारियों ने कहा कि जब तक केन्द्रीय विद्यालय की कक्षाएं इसी सत्र से प्रारम्भ नहीं होती, तब तक उनका आन्दोलन जारी रहेगा। प्रदर्शनकारियों का क्रमिक अनशन के अलावा आमरण अनशन पर बैठे लोगों की चिन्ता होने लगी है। आन्दोलन में पूर्व विधायक पुष्पेश त्रिपाठी, नगर पंचायत अध्यक्ष संगीता आर्या, पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष अनिल चौधरी, व्यापार संघ अध्यक्ष भूपेन्द्र काण्डपाल आदि जुटे हैं।

प्राधिकरण के खिलाफ उतरे प्रधान

हल्द्वानी। जिला स्तरीय विकास प्राधिकरण के नियमों के विरोध में ब्लाक हल्द्वानी के सभागार में ग्राम पंचायत संगठन की बैठक हुई। जिसमें प्रधानों ने प्राधिकरण के नियमों को काला कानून बनाते हुए खिलाफत की।

संगठन के जिलाध्यक्ष गोपाल सिंह अधिकारी ने कहा कि पंचायती राज व्यवस्था के तहत पंचायतों को मिलने वाले 29 विषय अभी तक पूर्ण रूप से हस्तान्तरित नहीं किए गए हैं। प्राधिकरण जैसे नियम लागू कर पंचायतों के अधिकारों को और सीमित किया जा रहा है। उन्होंने उत्तराखण्ड की भौगोलिक स्थितियों का उल्लेख करते हुए कहा कि यहाँ की छोटी जोत और बिखरी हुई खेती में ऐसे कानून ग्रामीणों के उत्पीड़न का कारण बन रहे हैं।

बैठक में रूक्मिणी नेगी ने कहा कि पंचायतों के अधिकार कम किये जा रहे हैं जिससे ग्रामीण विकास प्रभावित हो रहा है। त्रिवेणी गयाल ने कहा कि वर्तमान में प्रधान केवल रबर स्टैम्प बनकर रह गया है। पूजा बिष्ट ने आरोप लगाया कि पंचायतों के पास अब केवल जन्म और मृत्यु प्रमाण पत्र जारी करने जैसे सीमित कार्य ही रह गए हैं। दिनेश जोशी ने कहा कि यदि पंचायतों को नक्शा पास करने का अधिकार नहीं दिया गया तो यह ग्रामीणों के साथ धोखा होगा। बैठक में बालम नौला, हरेन्द्र बिष्ट, राजू आर्या, हेमू पलड़िया, मनीषा मालवाल, अर्जुन बिष्ट, नरेश बृजवाल आदि थे।

कार्मिकों के लिए बदलेंगे अचल सम्पत्ति की खरीद के नियम, प्रस्ताव का अध्ययन

देहरादून। प्रदेश में अब कार्मिकों के लिए अचल सम्पत्ति खरीदने के नियमों में बदलाव की तैयारी है। इसके तहत अब केन्द्र की तर्ज पर ही राज्य के कार्मिक अपने दो माह का वेतन जितनी अचल सम्पत्ति की खरीद कर सकेंगे। इससे अधिक की चल सम्पत्ति की खरीद के लिये उन्हें शासन से अनुमति प्राप्त करनी होगी। इसके लिये कार्मिक विभाग ने कर्मचारी आचरण नियमावली में संशोधन का खाका तैयार कर लिया है। विधायी में इसका अध्ययन किया जा रहा है।

प्रदेश में अभी कार्मिकों द्वारा चल-अचल व बहुमूल्य सम्पत्ति की खरीद को लेकर वर्ष 2002 में जारी शासनादेश लागू है। इस आदेश के अनुसार सरकारी 5 हजार से अधिक मूल्य की किसी चल सम्पत्ति का कय या विकय करता है तो इसके लिए उसे सम्बन्धित विभाग को सूचित करना होगा। विभागाध्यक्ष की अनुमति भी लेनी होगी। यह बात अलग है कि प्रदेश में पांचवां व छठा वेतनमान का अनुपालन नहीं हो रहा है।

चम्पावत में गोलज्यू महोत्सव

चम्पावत। नगर पालिका द्वारा दस दिवसीय गोलज्यू महोत्सव का आयोजन किया गया। सांस्कृतिक झांकी के बाद मंचीय प्रस्तुतियों ने इस दौरान समा बांधा। इसका शुभारम्भ मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने करते हुए शुभकामनाएं दीं। डीएम मनीष कुमार ने गोलज्यू मन्दिर में पूजा-अर्चना कर आयोजन समिति के प्रयासों की सराहना की। इस अवसर पर पालिका अध्यक्ष प्रेमा पाण्डे, भाजपा जिलाध्यक्ष गोविन्द सामन्त आदि मौजूद थे।

मोहान सफारी जोन बंद होने से रोष

रामनगर। कॉर्बेट से लगे रानीखेत वन प्रभाग के अन्तर्गत मोहान इको सफारी जोन को बिना पूर्व सूचना बन्द किए जाने के विरोध में पर्यटन से जुड़े नेचर गाइड, सफारी चालक और स्थानीय लोगों ने रोष प्रकट करते हुए सीएम को ज्ञापन भेजा है।

रामनगर में अतिक्रमण ध्वस्त किया गया

रामनगर। रामनगर-काशीपुर मार्ग के भवानीगंज क्षेत्र में पुलिस और नगर पालिका की संयुक्त टीम ने अतिक्रमण ध्वस्त किया। टीम ने नालों के ऊपर किये गये पक्के कब्जे और छज्जों को हटाने के साथ ही चेतावनी दी कि यह अभियान जारी रहेगा।

सीलिंग की भूमि को कब्जे में लिया

रुद्रपुर। जिलाधिकारी नितिन सिंह भदौरिया के निर्देश पर प्रशासन की टीम ने ग्राम फाजलपुर महरौला में स्कूल स्वामी द्वारा सीलिंग की जमीन पर किए गए कब्जे को सील कर अपने कब्जे में लिया। निरीक्षण के दौरान अपर जिलाधिकारी ने क्षेत्र में अवैध निर्माण के अन्य प्रकरण की तत्काल जांच के निर्देश भी दिये।

रामनगर पहुंची उमा भारती

नैनीताल। मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री और हिन्दूवादी नेता उमा भारती प्रदेश के तीर्थ स्थानों का भ्रमण कर रामनगर पहुंची और कहा कि यह उत्तराखण्ड भारत का सबसे पवित्र तीर्थ स्थल है, जहाँ हिमालय और बद्रीनाथ जैसे धाम स्थित हैं। उन्होंने उत्तराखण्ड के कुछ क्षेत्रों में डेमोग्राफिक चेन्ज पर चिन्ता करते हुए कहा कि जनसंख्या सन्तुलन प्रभावित होने की स्थिति सामने आई है।

बिन्दुखत्ता राजस्व ग्राम अनशन समाप्त

हल्द्वानी। बिन्दुखत्ता को राजस्व गांव घोषित किये जाने की मांग को लेकर वन अधिकार संगठन द्वारा चलाया जा रहा क्रमिक अनशन एडीएम विवेक कुमार के आश्वासन के बाद समाप्त हो गया। एडीएम ने कहा कि कानूनी प्रावधानों के तहत कार्य होंगे। उन्हें दस्तावेज उपलब्ध कराएं नियमानुसार कार्यवाही होगी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सोने की फाल......

प्रथम पृष्ठ का शेष

देखभाल करना कम कर दिया। तरह तरह के दुर्व्यसनों का शिकार भी वह हो गया। इस प्रकार वह एक सम्पन्न किसान से एक कंगाल बन चुका था। उससे किसी को सहानुभूति नहीं थी, अतः उसकी मदद को भी कोई नहीं आता। उसके घर कई-कई दिन तक चूल्हा जलने की नौबत ही नहीं आती थी। वस्त्रों के नाम पर उसके वदन पर चीथड़े होते थे। वह चीथड़ों के अन्दन कंगाल सा नजर आता था। इस तरह घोर गरीबी में रहते हुये उसने कई वर्ष बिताये। गरीबी के इन्हीं क्षणों में उसे देवी के थान (देवालय) की याद आ गई। उसके खेत के एक कोने में अन्धेरी देवी का थान था। जब वह सम्पन्नता के चरमोत्कर्ष पर था, तब उसने कभी भी थान में धूप बाती जलाई नहीं, उसकी ओर कभी हाथ जोड़ कर प्रार्थना न की। थान के चारों ओर वर्षों से ऊँची-ऊँची घास व बड़ी-बड़ी झाड़ियाँ उग आई थीं। थान के अन्दर एक जंगली बिल्ला आकर रहने लगा था। दूर से थान का पता ही नहीं चलता था। आज जब रोग व गरीबी ने उसे पूरी तरह अपनी जकड़ में ले लिया, तब उसको देवी का ध्यान आया। 'अन्धेरी देवी' पौराणिक देवी नहीं थी, बल्कि एक महिला की अतृप्त प्रेतात्मा थी। सैकड़ों वर्ष पूर्व वह जीवित रही होगी। उसके प्रकट होने पर उसके कुल के लोगों ने उसकी स्थापना करके उसकी पूजा करना प्रारम्भ कर दिया था और कालान्तर में उसने देवी का स्थान पा लिया। अन्धेरी देवी नाम पड़ने का एक कारण था। उसकी हत्या अन्धेरे में की गई थी, जिसके कारण उसकी पूजा रात्रि के समय, एकदम अन्धेरे में की जाती थी। धीरे-धीरे वह पूरे गाँव में 'अन्धेरी' नाम से मशहूर हो गयी। वह अत्यधिक उदार मानी जाती थी। भक्तों के द्वारा की गई जरा सी सेवा का फल तुरन्त दे देती थी।

पान सिंह ने थान के आस-पास की झाड़ियाँ व घास साफ की। बिल्ले ने थान खराब कर दिया था, उसे ठीक किया। धूप दीप जला कर उसने देवी की अर्चना की तथा अब तक हुई उसकी उपेक्षा के लिये क्षमा याचना की। उसने नित्यप्रति ही देवी की अर्चना करने का नियम बना लिया। उसके अन्दर उपजे भक्ति भाव ने धीरे-धीरे उसके मन को शान्ति प्रदान करना प्रारम्भ कर दिया। उसे साफ अनुभव हो रहा था कि अब उसका स्वभाव बदल रहा है। उसने अपने बच्चों तथा पत्नी को भी वापस बुला लिया।

एक रात वह अपनी छत पर सोया था। उसे पेड़ की चोटी से कुछ आवाज सुनाई दी। उसने उस आवाज को ध्यान पूर्वक सुना 'हलतोला में हल जोता तो तुम्हारा भाग्य जग जायेगा।' पेड़ पर यह किसकी आवाज हो सकती है, उसने गौर से देखा। उसे एक बड़ा काला तोता पेड़ पर बैठा दिखाई दिया। यह आवाज तोते के मुंह से निकल रही थी। थोड़ी देर बाद तोते की आवाज आना बन्द हो गई। तोता उड़ चुका था। पान सिंह फिर बिस्तर पर लेट गया। उसने कल्पना की कि खेत जोतने पर क्या चीज मिल सकता है। तभी उसे अपनी नानी की बचपन में सुनी एक बात याद आ गई कि हलतोला के खेत में सोने की कई सेर वजन की एक सोने की फाल गढ़ी हुई है। इससे पहले भी कई लोग फाल निकालने का प्रयास कर चुके थे, पर कोई सफल नहीं हो पाया था। अतः लोग इस बात को अब भूल चुके थे। पान सिंह सुबह होने का इन्तजार करने लगा। उसके मन में पुःन अमीर बनने की लालसा जागने लगी। सुबह होते ही वह बैल लेकर खेत पर जा पहुँचा। खेत बहुत बड़ा था इस बात की कोई जानकारी नहीं थी कि इतने बड़े खेत में, किस स्थान पर वह स्वर्ण फाल स्थित होगी। फिर भी उसने पूरा खेत जोतने का निर्णय लिया, जिसमें कई दिन लगने थे। वह तीन दिन तक रोजाना खेत जोतता रहा। लगभग दो तिहाई खेत जुत चुका था, पर कोई चीज प्राप्त नहीं हुई थी। फिर भी वह हलाश नहीं हुआ बल्कि जब थोड़ा सा खेत बच गया था और- 'अब सफलता में अधिक देर नहीं है'- यह सोच कर वह रोमांचित हो उठता था। अभी सफलता नहीं मिली थी परन्तु सफलता की कल्पना मात्र से ही दर्प की एक पतली रेखा उसके दिमाग से गुजरी। उसके मन में यह विचार आया कि यदि सोने की फाल मिल गई तो वह फिर से ठाट-बाट से रहने लगेगा। उसकी गरीबी में किसी ने उसका साथ नहीं दिया था, अतः लोगों के प्रति घृणा का भाव भी मन में आया। धन शक्ति के बल पर लोगों से बदला लेने या उन्हें नीचा दिखाने का भी एक विचार क्षणभर के लिये मस्तिष्क में कौंधा। अब थोड़ा सा खेत जुतने कसे बाकी रह गया था। अचानक उनके मन में कहीं से यह बात आई- अन्धे हल कैसे चलाते होंगे,' हल हाथ में ही थ, अतः प्रयोग करके देखने का मन हो चला। उसने आँखें बन्द कर ली और अन्धों को हल चलाने में क्या कठिनाई होती होगी, उसका प्रत्यक्ष अनुभव वह पा रहा था। इसी बीच चमकदार फाल खेत से ऊपर निकल गई परन्तु पानसिंह ने तो आँखें बन्द कर रखी थीं। वह आँखें बन्दर किये ही खेत के दूसरे सिरे की ओर निकल गया। इसी बीच वही काला तोता पेड़ पर आकर बोलने लगा, 'अब आगे जोतने से कोई लाभ नहीं, फाल निकल चुकी है और उसे एक राहगीर उठाकर ले जा चुका है।' अचानक पान सिंह ने आँखें खोली। काला तोता उड़ चुका था। पान सिंह को खेत के दूसरे छोर पर एक आदमी तेजी से भागता हुआ दिखाई दिया, जिसके हाथ में चमकदार स्वर्ण फाल थी। उसने पीछा किया पर तब तक वह बहुत दूर जा चुका था और जंगल में अदृश्य हो गया था। पान सिंह हाथ मलता रह गया। वह फिर वही गरीबी के दिन गुजारने पर मजबूर हुआ।

रूपसियाबगड़ जलविद्युत परियोजना कार्य से पूर्व आपदा प्रभावित गांवों का संरक्षण हो

मुनस्यारी। तहसील मुख्यालय से लगभग 10-15 किमी दूर 'सिरकैरि भेल' रूपसिया बगड़ नामक स्थान गोरीनदी पर 120 मेगावाट हाइड्रो इलैक्ट्रिकल पावर प्लांट प्रोजेक्ट जिससे 529 मिलियन यूनिट बिजली प्रतिवर्ष उत्पन्न होगी। स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा होगा किन्तु गोरी नदी की अविरल धारा को रोकते विदोहन भी बड़ी मात्रा में की जाएगी, पूर्व में कुछ गाँव आपादा प्रभावित जिसका दंश वर्ष -1995, 2013, 2017 में झेल चुके हैं। कुछ परिवार विस्थापित तो कुछ परिवार मुवावजा राहत पा भी चुके हैं। पावर प्रोजेक्ट निर्माण स्थल से आगे गोरी नदी के मुहाने पर -लीलम, धापा, कुलथम दुम्मर, जो अति सम्वेदनशील गाँव बसे हैं इन गाँवों की पूर्व की सभी जानकारी से अवगत होना जरूरी है।

तल्ला दुम्मर गाँव के वन पंचायत भूमि में पहले से उत्तराखण्ड जल विद्युत निगम द्वारा सुरिंगगाड़ नदी पर 5 मेगावाट बिजली का प्रोजेक्ट निर्माण किया गया है, तब भी पहाड़ तोड़ने के लिए हजारों डायनामाइट विस्फोट कर तल्ला दुम्मर, धापा गाँव पूर्ण खतरे के जद में आ चुका हैं। गाँव की स्थिति ख़राब, जमीन उबड़-खाबड़ धंसाव हो गया है। जिसे नजरंदाज भी किया गया। इन गाँवों के निवासी अब एक और गाँव से ऊपर इतने बड़े प्रोजेक्ट कार्य के विदोहन से डरे सहमे हैं। भविष्य में इन गाँवों की सुरक्षा की व्यवस्था न की गई तो ये गाँव जमींदोज होकर विलुप्त हो सकता है। इस प्रकरण पर ग्रामीणों में रोष है, इनकी सुरक्षा न किये जाने पर आन्दोलन हो सकता है। इस गम्भीर प्रकरण को देखना होगा।

30 जून से शुरू होगी कैलास मानसरोवर यात्रा, जगह-जगह जेसीबी तैयार

दिल्ली/पिथौरागढ़। विश्व प्रसिद्ध कैलास मानसरोवर यात्रा 30 जून से शुरू होगी। यात्रा को सुगम बनाए रखने के लिये बीआरओ ने जगह-जगह जेसीबी और अन्य जरूरी मशीनरी के साथ पर्याप्त श्रमिकों को तैनात करने की तैयारी कर ली है। बताया गया है कि तीन जुलाई तक दिल्ली में यात्रियों के दस्तावेजों की जांच, स्वास्थ्य परीक्षण सहित अन्य औपचारिकताएं पूरी की जाएंगी। चार जुलाई को यात्रा का पहला दल दिल्ली से टनकपुर पहुँचेगा। 5 जुलाई को यह दल आधार कैम्प धारचूला पहुँचेगा।

जिलाधिकारी पिथौरागढ़ आशीष कुमार भटगाई के अनुसार यात्रा पूरी कर दल 14 दिन बाद लिपुलेख दर्रे को पार कर भारत में प्रवेश करेगा। यात्रा में दस दल शामिल हैं। यात्रा की तैयारी के लिये पहले से ही निर्देश दिये जा चुके हैं। प्रशासन पूरी तरह तैयार है। 26 अगस्त को यात्रा का समापन होगा। बताया कि कैलास मानसरोवर यात्रा के दौरान लिपुलेख सड़क पर आवाजाही को सुगम बनाए रखके लिये तैयारी पहले से शुरू कर दी गई है। अतिरिक्त श्रमिक इस कार्य में लगाए गए हैं और यात्रा के दौरान जेसीबी सहित अन्य जरूरी उपकरण व श्रमिकों तैनात रखने के निर्देश दिए गए हैं।

बर्चस्व की लड़ाई में अशान्त होता चम्पावत

चम्पावत। मुख्यमंत्री का विधानसभा क्षेत्र और विकास के लिये गति पकड़ रहा चम्पावत नेताओं और छुटभैयों की लड़ाई में अशान्त होता जा रहा है। विकास की दौड़ के राग तो सुनाई दे रहे हैं लेकिन जिस प्रकार से अपनी उलझनों में उलझे नेता और उनके पिछलग्गू बहके कदमों में हैं, उससे आम जन दिक्कत महसूस करने लगा है। बीते दिवस चम्पावत से 20 किमी दूर सहेली की शाही में गई नाबालिक के साथ सामूहिक दुष्कर्म का मामला चारों ओर गूंजा। ढूंढखोज के बाद एक डेयरी कक्ष में बालिका बदामद हुई। पूरन सिंह रावत, विनोद सिंह रावत, नवीन सिंह रावत पर आरोप लगे। इनके भाजपा से जुड़े होने पर राजनीतिक रंग भी दिखाई दिया। इसके बाद पुलिस ने अपनी जांच करते हुए मामले को कमल व साथी द्वारा षड्यन्त्र का हिस्सा बताया और बालिका के बयान भी जारी हुए। फिलहाल प्रकरण बेहद चर्चा में है और ऐसी घटना क्षेत्र के लिये शुभ नहीं है।

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत
सम्पर्क 7351285555

धमोत होम स्टे
धरमघर/चौकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148 www.mountainheights.in

HIMALAYAN MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय के बढ़ते कदमों की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

श्रीमती मथुरा पांगती

'शक्ति कुंज', जोहार नगर

भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

प्रेम सिंह बृजवाल

बलवन्त कालोनी

दोनहरिया

भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

(21 मई 1944 - 22 फरवरी 2013)

स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती

(संस्थापक-सम्पादक पिघलता हिमालय)

की

82 वीं जयन्ती पर शत शत नमन।

आपकी प्रेरणा के सहारे

पि.हि. के मिशन को चलाने के लिये

संकल्पित

पिघलता हिमालय परिवार

एवं

परिजन

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर

नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

फोन सम्पर्क- 05961-222236 मो.- 8958525979, 9411134775

न तेरा न मेरा Thats

APNA GHAR

चौकोड़ी

HOTEL RESTRO BANQUET

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

मो. 9458920379 6396098804

YOGA MEDITATION HOMELY FOOD LIVE MUSIC BIRTHDAY WEDDING

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)